

31 मई, 2010 को 1630 बजे सेन्टेनरी ऑडिटोरियम, मद्रास विश्वविद्यालय, चेन्नई में तमिलनाडु के मुख्य मंत्री डा. कलईगनार एम. करुणानिधि की कृतियों के अंग्रेजी अनुवाद का विमोचन करने के लिए आयोजित समारोह में माननीय उपराष्ट्रपति श्री मो. हामिद अंसारी का अभिभाषण

वणक्कम !

विश्व साहित्य में तमिल भाषा के महत्वपूर्ण योगदान को प्रदर्शित करने वाले इस समारोह में उपस्थित होकर मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। यह गैर-तमिल भाषी जनता के लिए डा. कलईगनार एम. करुणानिधि के, जोकि कला के क्षेत्र में भी उतने ही पारंगत हैं जितने कि राजनीति के क्षेत्र में, साहित्य जगत का पट खोलता है। भारतीय राजनीति में वह शायद उन कुछेक जीवित राजनीतिज्ञों में से हैं जिन्होंने काफी दक्षता के साथ अपनी साहित्यिक प्रतिभा, राजनीतिक दूरदृष्टि और सामाजिक सक्रियता का सफलतापूर्वक सामंजस्य स्थापित किया है। उनकी साहित्यिक और राजनीतिक विरासत तमिल लोगों, उनकी संस्कृति और उनकी भाषा के प्रति उनकी व्यक्तिगत प्रतिबद्धता के प्रति उनका योगदान है।

डा. करुणानिधि का लेखन पेरियार ई.वी.रामासामी और अरिगनार अन्ना की राजनीतिक परंपरा और भरतियार की साहित्यिक परंपरा को परिलक्षित करता है। महाविद्यालय की औपचारिक शिक्षा की कमी प्राचीन तमिल लेखन में निपुणता प्राप्त करने और अद्वितीय समकालीन द्रविड़ साहित्यिक शैली का विकास करने के मार्ग में उनके लिए बाधक नहीं बनी। उन्होंने अपनी राजनीतिक दूरदर्शिता का प्रतिपादन

करने के लिए पत्रकारिता, सिनेमा, रंगमंच और भाषण कला का भी सफलतापूर्वक प्रयोग किया है। कला को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानने की उनकी दूरदर्शिता वाली सोच आधुनिक काल में भी प्रासंगिक है क्योंकि प्रौद्योगिकी और संचार के माध्यमों ने कला के विभिन्न रूपों तक सभी की पहुंच को संभव बना दिया है।

महान तमिल कवि सुब्रमण्यम भारती ने लिखा:

"अपनी प्राचीन कहानियों को गुप-चुप तरीके से अपने बीच बचाकर रखना कोई जीत नहीं; हमारी कविता वाकई होगी शानदार तभी जब विदेशी जमीं पर लोग सराहेंगे इसे।"

यह तमिल और अन्य भारतीय भाषाओं में हमारी समकालीन कहानियों और कविताओं पर और भी अधिक लागू होती है। इन साहित्यिक कृतियों के कुशल अनुवाद के बिना देश के भीतर और कुल मिलाकर दुनिया भर में हमारी विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध साहित्यिक परम्पराओं की उत्कृष्टता सराहना से वंचित रह जाएगी।

यह स्वीकार्य तथ्य है कि डा. करुणानिधि ने साहित्य के क्षेत्र में अपनी असाधारण श्रेष्ठता तमिल नाट्य साहित्य में अपने योगदान से हासिल की, जिनमें से कई कृतियां मूल रूप से सिनेमाई प्रस्तुतियों के लिए लिखी गई थीं। ये फिल्में अत्यधिक लोकप्रिय और लीक से हटकर थीं जिन्होंने न केवल सामाजिक बुराईयों और अंधविश्वासों के प्रति संघर्ष का स्वर गुंजायमान किया बल्कि इन्होंने सामाजिक न्याय के आधुनिक मानदंडों के आलोक में उत्कृष्ट तमिल साहित्य की पुनर्व्याख्या भी की।

यह कहा जाता है कि डा. करुणानिधि की सभी अभिव्यक्तियां काव्यात्मक हैं और यहां तक कि उनके गद्य में भी अत्यधिक पद्यात्मक शब्दावली का प्रयोग किया गया है। उनके काव्य में, तमिल भाषा पर उनकी उल्लेखनीय पकड़ परिलक्षित होती है। अनुवादकों ने प्रायः यह टिप्पणी की है कि उनकी कविताओं का अनुवाद करने में वास्तविक चुनौती शीर्षकों के अनुवाद से प्रारंभ होती है।

भाषायी तथा साहित्यिक सिद्धान्तों पर डा. करुणानिधि की पकड़ "दि फ्लावर-गार्डन ऑफ तोलकप्पियम" में उभरकर सामने आती है। विशेष तौर पर डा. करुणानिधि द्वारा तोलकप्पियम के एक दोहे की टीका करते हुए अभाव का पीड़ा के एक स्रोत में रूप में सजीव निरूपण मेरे दिल को छू गया। यह कविता उस गुलाब की पीड़ा को व्यक्त करते हुए रची गई थी जो नेहरू अपनी कोट पर लगाते थे और मैं उन पंक्तियों को उद्धृत करता हूँ:

"भद्र जन! सिद्धान्तों वाले व्यक्ति!

वह मृत्यु कहां है जिसने आपको हमसे छीना?

आज, आपने मुझे अपने हृदय के पास रख लिया

किन्तु आपने मुझे छोड़ दिया और बहुत दूर

चले गए। उचित है, क्या यह ?"

देवियो और सज्जनो

आज जिन अनुवादों का विमोचन किया जा रहा है उनमें उनके लेख और भाषण भी शामिल हैं जिनसे हमें डा. करुणानिधि के व्यक्तित्व और रुझान की परख होती है।

मुझे विशेषकर नेताओं और सार्वजनिक वक्ताओं, खास तौर पर अरिगनार अन्ना और पेरियार के व्यवहार के तौर-तरीकों से संबंधित उनके निबंध को पढ़ना अच्छा लगा। हमारी आजादी की स्वर्ण-जयन्ती के अवसर पर उन्होंने चार नेताओं - महात्मा गांधी जिन्होंने कहा था कि सत्य ही ईश्वर है; अरिगनार अन्ना जिन्होंने कहा था कि हमें गरीबों की मुस्कान में ईश्वर को देखना चाहिए; पेरियार जिन्होंने हमें फल की आशा किये बिना अपने कर्तव्य का निर्वहन करने की प्रेरणा दी; और कामराज जिन्होंने यह कहा था कि कठिन परिश्रम ही महानता की जननी है, के विवेकपूर्ण शब्दों का स्मरण करते हुए अपना निबंध समाप्त किया।

मुझे निश्चित रूप से डा. करुणानिधि की सलाह कि सार्वजनिक भाषण करते समय विवेक का बड़ा योगदान होता है, का अनुकरण करते हुए अपना भाषण समाप्त करना चाहिए। मैं एक बार पुनः भरतियार विश्वविद्यालय को डा. करुणानिधि की साहित्यिक कृतियों के अंग्रेजी अनुवाद को प्रकाशित करने के लिए उनके द्वारा की गई पहल के लिए उन्हें बधाई देता हूँ।

मैं कामना करता हूँ कि डा. कलईगनार एम. करुणानिधि कई वर्षों तक राष्ट्र, तमिल जनता, तमिल संस्कृति और तमिल भाषा की सेवा करते रहें।

नंदरी वणक्कम